ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 105-110

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रवासियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1.सीमा दास 2.सीमा चंद्रन

1.शोध अध्येत्री 2.असि0 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरकोड, (केरल) भारत

Received- 23.02.2020, Revised- 28.02.2020, Accepted - 05.02.2020 E-mail:drseemachandrancukhindi@gmail.com

सारांश : *साहित्य राजनीति नहीं है जिसे धरातल पर उतारकर उसका मुल्यांकन किया जाए, बल्कि साहित्य समाज का दर्पण है । मोटेतौर पे कहे तो साहित्य, साहित्य है और कुछ नहीं । एक ओर भारतीय साहित्य को जहाँ धारा की परिपाटी पे रखा जाता है जबकि प्रवासी हिन्दी साहित्य को वैश्विक पटल पर रख कर उसका मुल्यांकन किया जाता है, चाहे भाषागत दृष्टि से हो या बोलचाल की दृष्टि से हो या संस्कृति के दृष्टि से हर हाल में प्रवासी हिन्दी साहित्य का परिदृश्य सामने ऊभर कर आता है ।*

कुंजीभूत शब्द– *साहित्य, भारतीय साहित्य, परिपाटी, प्रवासी, वैश्विक पटल, मुल्यांकन, भाषागत ।*

प्रवासी हिन्दी साहित्य अपने आप में अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण है । यह अलग बात है कि व्यक्ति जब अपने परिवेश से इत्तर जा बसता है, तब उसे उस समाज एवं परिवेश के अनुकूल ढलने में तथा उस व्यवस्था के अनुरूप अपने आप को सींचने में उसे समय लग जाता है, किन्तु प्रवासी प्रवास में रहकर अपने आप को भले ही किसी भी कार्य करने के लिए गुलाम बन गए हों, परन्तु अपनी मानसिकता को कभी गुलाम होने नहीं दिया । परिणामस्वरूप आज भी लाखों की तादात में भारतवंशी भारत से बाहर जाकर अपनी जीविकोपार्जन कर रहे हैं, इसका मुख्य कारण है– अच्छी सुख–सुविधा, रोजगार के सुअवसर, यातायात के साधन, चिकित्सा की व्यवस्था आदि द्य कुलमिलाकर कहा जाए तो यह सारे तत्व वैश्वीकरण के कारण आया, जिसके चलते व्यक्ति उत्तर–आधुनिकता की ओर अग्रसर होने लगा ।

प्रवास के विविध कारकों को खोजे तो ज्ञात होता है कि विवाह, परम्परा, रोजगार की आवश्यकता, और अवसर, शिक्षा की उपलब्धता तथा मानव विकास के लिए विविध प्रकार के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सुरक्षा को इसका कारण माना जा सकता है ।

'प्रवास' शब्द के लिए संस्कृत–हिंदी कोश में– "विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेश निवास।"[1] आदि अर्थ दिए गए है ।

पी.एच.रोसी के मतानुसार– "यदि कोई व्यक्ति किसी नए स्थान में जाने की इच्छा रखता है, तो उसे प्रवासी कहा जाना चाहिए ।"[2]

इस प्रकार कोशगत अर्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अपनी जन्मभूमि को छोड़कर किसी अन्य स्थान या देश में वास करना प्रवास कहलाता है । इस प्रकार रोजगार व शिक्षा के उद्देश्य से प्रवास में गये लोगों को प्रवासी कहा जाता है ।

गौरतलब बात यह है कि अनुबंध पर जाने वाले अनपढ़ लोग अपने को गिरमिटिया कहने लगे द्य इन गरीब मजदूरों के बीच उनकी लोक–संस्कृति रची–बसी थी, जिसका स्पष्ट स्वरूप को इस प्रकार जाना जा सकता है– जब वे धान काटते, रोपाई करते, दाना निकाल कर दौनी करते हुए इत्यादि द्य अर्थात् उन गरीब भारतीय मजदूरों की लोक भाषा भोजपुरी हुआ करती, जबकि पढ़े–लिखे लोग बोलचाल की भाषा के रूप में खड़ीबोली हिदी का उपयोग करते । "गिरमिटिया शब्द की उत्पत्ति 'गिरमिट' शब्द से मानी जाती है । यह शब्द अंग्रेजी के एग्रीमेंट (।हतमम. उमदज) शब्द का भोजपुरीकरण रूप है– एग्रीमेंट झ ग्रीमेंट झ गिरमेंट शब्द बना ।"[3] अभिमन्यु अनत के साहित्य में जिन प्रवासी मजदूरों की गाथा को चित्रित किया गया है, वास्तव में वह गिरमिटिया काल के मजदूर है जो कि 19वीं शताब्दी के पुवार्द्ध में भारत से अधिकांश मजदूरों को मजदूरी करने के लिए मॉरिशस लाया गया द्य उनमें ज्यादातर गरीब परिवार के लोग थे ।

जबकि प्रवासी शब्द का प्रादुर्भाव 80 के बाद आया । हिन्दी शब्द 'प्रवासन' की तुलना में 'डायस्पोरा' शब्द प्राचीन है । यह शब्द मूलतः ग्रीक भाषा का है द्य डायस्पोरा या Diaspora को ग्रीक भाषा के Diaspor शब्द से गया है । यह दो शब्दों से मिल कर बना है । Dia+sperien जिसका अर्थ है– "बीजों को बोना, छितराना या बिखेरना , फैलाना" आदि है । इस प्रकार से देखा जाय तो देश के बाहर हिंदी को पहुँचाने में गिरमिटिया मजदूरों की ही देन है । अतः गिरमिटिया देश के अंतर्गत फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद व गोयना, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैण्ड, अमेरिका इत्यादि देश मुख्य है । इसके अतिरिक्त गिरमिटिया देशों में से मॉरिशस भी एक है जहाँ हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को देखा जा सकता है ।

एक ओर प्रवासी साहित्य के अध्ययन–अध्यापन

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

से यह जानकारी मिलती है कि प्रवास में रह रहे भारतवंशियों की पीड़ा क्या थी एवं क्या है? प्रवासी व्यक्तियों की मानसिकता कैसी होती है? प्रवासी बच्चों की मानसिकता क्या है? प्रवासी माता–पिता की विचारधारा कैसी होती है? चूँकि प्रवासी हिन्दी साहित्य प्रवासियों के बेगानेपन का दंश, बेरोजगारी की समस्या, अस्तित्व का संघर्ष, जीवन–मूल्य, मानव–मूल्य, तथा मूल्यों की टकराहट, प्रवासी जीवन के नवीन अनुभवों से अवगत करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । दरअसल यह साहित्य स्वदेश एवं परदेश के अंतर्द्वंद्व पर टिकी है ।

प्रवासी हिन्दी साहित्य में मॉरिशस के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में से एक अभिमन्यु अनत का नाम है, जिन्हें मानवीय संवेदनाओं के कवि तथा भारतीयता के प्रति सजग रहने वाले साहित्यकार कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी । मॉरिशस के त्रियोले में जन्में सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार रहे हैं । इनकी रचनाएँ भारत एवं भारत के बाहर भी पढाई जाती है । इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रवासियों की पीड़ा, उसकी व्यथा को मुखरित किया है तथा उसकी अवहेलना को भी उजागर किया है कि किस प्रकार जब कोई प्रवासी किसी नवीन स्थान या प्रांत या प्रदेश पर जाता है तब उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है? सच्चाई तो यह है कि ऐसे में प्रवासियों को अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता है द्य प्रवास में रहने वाले व्यक्तियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता ही है, लेकिन उसके साथ ही साथ पीछे छूटे (भारत में छूटे) अपने परिवार को लेकर भी उसे अनेक चिंताओं का सामना करना पड़ता है । यानी प्रावस के दौरान व्यक्ति को अनेक शारीरिक व मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें से विशेष रूप से हैं– अस्तित्व का संकट ।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के प्रमुख कहानीकार है द्य इनकी कहानी संग्रह है– 'खामोशी की चीत्कार', 'इंसान और मशीन'(1976), 'वह बीच का आदमी'(1981), 'एक थाली समंदर'(1987), 'बवंडर बहार भीतर'(2002), 'अब कल आएगा यमराज'(2003) । रामदेव धुरंदर कृत 'विष मंथन'(1995), पुजबंद सेन कृत 'नया सफर सहने का'(1992)। दीपचंद बिहारी कृत कहानी संग्रह–'सागर पार', 'स्वर्ग में क्या रखा है' । जयनारायण राय कृत 'आनंद की ओर', 'आशीर्वाद', 'और एक ही आशा' नामक तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई ।

अभिमन्यु अनत ने अब तक 33 उपन्यास, 6 कहानी संग्रह, 5 कविता संग्रह, 5 नाटक संग्रह आदि लिख चुके हैं इसके अलावा फ्रेंच एवं क्रिओली भाषाओँ में भी इनकी रचनाएँ है । जिसमें से 'लाल पसीना', 'गाँधीजी बोले थे', 'और नदी बहती रही',आदि चर्चित उपन्यास है, इसके अतिरिक्त 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', 'चुन–चुन चुनाव' 'अचित्रित', 'हम प्रवासी' आदि उपन्यास है ।

अभिमन्यु अनत ने साहित्य की हर एक विधा में निपूर्णता प्राप्त किया । विदेशी परवेश में रहने के बावजूद भी भारतभूमि से जुड़े रहे हैं । उनकी जन्मभूमि भले ही मॉरिशस रहा हो परन्तु कर्मभूमि भारत की सौंधी मिट्टी ही रहा है, जिसकी खुसबू उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से झलकती है । इनकी समस्त रचनाओं में प्रवासी भारतीयों के जीवन व उससे जुड़ी समस्याओं का वर्णन पढने को मिलती है । यदि हम सामाजिक समस्याओं की बात करें तो पायेंगे कि इन्होंने जुआ(जुवा), शराब, चरस, नशा, व्याभिचार, गरीबी आदि जैसी अनेक समस्याओं से इनके समस्त पात्र जूझते हुए नजर आते हैं ।

'तीसरे किनारे पर' उपन्यास में राकेश प्रायः होटलों में जाता रहता है । उसे बीयर और शराब दोनों का शौक है– "तीन घंटे में राकेश ने बीयर की चार बोतलें खुली कर डाली थी और उसने अपने पैरों में लड़कड़ाहट महसूस की।"[4] इसके साथ ही साथ 'वह बीच का आदमी' कहानी गरीबी से उत्पन्न सामाजिक समस्या का चित्रण करती है, जिसमें नायक अपनी तीन बेटियों के विवाह हेतु धन जुटाने के लिए नौकरी करने के उद्देश्य से अपने घर–परिवार को छोड़कर दूर देश जा पहुँचता है और वहीं जा बसना पड़ता है । व्यक्ति अच्छी जीवन यापन की कामना लिए विदेश की धरती पर जा बसता है परन्तु जा बसने के दौरान उन्हें अनेक दंश झेलने पड़ते हैं। साथ ही साथ 5 साल का शर्तबंद पूरा होने के बाद भी वह उससे मुक्त नहीं हो पाता है, इसका मुख्य कारण है– जब भारतवंशी वापसी की सोचता है, तब उसे कुछ पैसे एडवांस के रूप में दे दिया जाता है जिसका कर्ज चुकता करने का काम उसके आने वाली पीढ़ियों तक लगा रहता है ।

अभिमन्यु अनत कृत 'माथे का टीका' कहानी में बेरोजगारी की समस्या सामने ऊभर कर आती है । इस कहानी में नवयुवक चोरी करके अपनी गरीबी व बेरोजगारी की समस्या को दूर करने की सोचता है परन्तु वह असफल हो जाता है, जिसका भुगतान चीनी के पाग (रस) को शरीर पर थौंप कर धूप में पेड़ों पर लटका दिया जाता, जो कि चीटियों का भोजन जा बनता जबकि छोटी सी भी भूल पर छड़ी या कोड़ो की मार होती । "कम से कम कुछ दिनों के लिए यह तो भूल जायेंगे कि इस स्वतंत्र और धन–धान्य पूर्ण देश में हम बेकार हैं ।"[5]

इस प्रकार बेरोजागारी, महंगाई, गरीबी, आदि की समस्याओं का चित्रण इनके साहित्य में देखा जा सकता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

वर्तमान समय में आधुनिकता की चकाचौंध ने पाश्चात्य संस्कृति के ओर लालायित किया, जिससे लोग उस ओर तो निकल पड़े किन्तु दूसरी ओर आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव के कारण व्यक्ति एवं समाज में परिवर्तन काफी तेजी से देखा गया। जिसके परिणामस्वरूप विखंडन की समस्या, रिश्तों में तनाव आदि की समस्या ऊभर कर सामने आई । दो पीढ़ियों के खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार आदि में भी अनेक अंतर अनत के साहित्य में परिलक्षित होता है।

'चुन–चुन–चुनाव' उपन्यास में स्वस्ति अपने घर में अपनी माँ के रूप में जिस स्त्री को देखती आ रही थी, वह स्त्री उसके पिता की पत्नी कम दासी अधिक जान पड़ती । केवल इसलिए नहीं कि उनपे जुल्म–सितम के कहर बरसाए जाते, और किसी भी कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता बल्कि इसलिए कि उसे हरेक काम जबर्दस्ती करवाया जाता । अपने साहित्य के माध्यम से मॉरिशस की उन भारतवंशी मजदूरी करती औरतों का चित्रण किया है जो कि किसी न किसी फैक्टरी में काम करती है, अर्थात् स्त्रियाँ कामकाजी होने बावजूद भी वे स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन जी नहीं सकती थी , वे स्त्रियाँ मुख्यरूप से गोरे मालिकों की गुलाम बन चुकी थी । अतः वह ब्रिटिश सरकार के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गई थी, जिसे वह जब चाहे व्यवहार कर ले जाए और जब जी भर जाए तब उसे उतार कर फेंक दिया जाए । दरअसल फैक्टरी में मजदूरी कर रही औरतों का खुले आम शोषण होता, खूब काम करवाया जाता द्य इसके विरुद्ध में 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' की नायिका नेहा दृढ़ संकल्प साधे अत्याचारों के विरुद्ध बोल उठती है– "जिम्मेदार लोग पत्थर ही बने हुए थे, पर साथ–ही–साथ सरकार से संबंद्ध लोग भी मुड़िया पहाड़ की तरह अंधे और गूंगे बने हुए थेद्य"[6] नेहा अपने सामर्थ्य के अनुसार कर्मक्षेत्र में कूदकर नौकरी करने के लिए ठान लेती है, साथ–ही–साथ वह पशुपालन का भी कार्य संभालती हैं और मजदूरी करके अपना घर चलाती है ।

प्रवासी भारतीयों के जीवन के विविध पहलुओं पर विचार करें तो पाएंगे कि प्रवासियों को कहीं संघर्ष का सामना करना पड़ता है, तो कहीं मानसिक टकराहट का शिकार होना पड़ता है, तो कहीं द्वंद्व को झेलना पड़ता है । लेकिन मुख्यरूप से उन्हें अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ती है । आज विभिन्न देश प्रान्तों में प्रवासी भारतीय अपनी जीविका–यापन कर रहे हैं । प्रवासी, प्रवास में रहकर 1 कितना भारतीय है? इसका सीधा नाता गिरमिटिया मजदूरों से हैं, जो प्रवास में गये परन्तु अपनी पहचान भारतवंशी के रूप में दिए द्य गिरमिटिया देशों की भारतीयता के प्रश्न पर डॉ. मृदुला कीर्ति लिखती है– "गिरमिटिया हमसे कहीं अधिक भारतीय है, जो गुलाम बनकर गये लेकिन अपने मन को गुलाम नहीं होने दिया ।"[7] कई बार ऐसा भी होता है कि एक प्रवासी जब स्वदेश लौटना चाहता है तो वह पाता है कि अब वहाँ उसका कोई नहीं है । स्वार्थ की इस दुनिया में तथा आकर्षण के इस चकाचौंध भरे संसार में वह अपने आप को अकेला ही पाता है । अर्थात् उस प्रवासी भारतवंशी के जीवन की त्रासदी यह है कि सबकुछ होने के बावजूद भी वह अकेला होने के कारण जीवन के बाकी दिनों को वृद्धाश्रम में जीने के लिए विवश हो उठता है ।

अभिमन्यु अनत ने अपने समस्त रचनाओं में सामाजिक रुढ़िवादी समस्याओं को उजागर किया है । साथ ही जड़ हो चुकी परम्पराओं एवं मान्यताओं को भी पाठकों के सामने अंकित किया है द्य ताकि पुरानी मान्यताओं से, प्रवासियों की समस्याओं से, घरेलू नोक–झोख से यानी घरेलू कलह आदि से मुक्ति का मार्ग मिल सकें ।

वास्तव में देखा जाए तो अनत की समस्त रचनाएँ प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों की गाथा को बखान करने वाला जीता जगता साहित्य है द्य जिसमें इन्होंने गिरमिटिया जीवन के संघर्ष को, उनकी पीड़ा को, दशा एवं दिशा को बड़ी गहराई के साथ सफलतापूर्वक सींचा है द्य अनत के शब्दों में– "मैं किसी प्रतिबद्धता का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहता, फिर भी मेरा लेखन एक समर्पित लेखन है द्य मैं उन सभी वर्गों की पीड़ा को शब्द देने का प्रयास करता हूँ, जिनकी आवाजें जब्त हैं ।"[8] लेखक का आम आदमी के प्रति अनोखा झुकाव रहा है तथा भारत के प्रति जुड़ाव कर्म के आधार पर रहा है द्य अतः इनके साहित्य में मॉरिशस के गिरमिटिया मजदूरों की गाथा चित्र खींचा गया है । अर्थात् आतीत से वर्तमान की ओर प्रतिबिम्बित हुआ है । इन्होंने अपनी रचनाओं में गिरमिटिया मजदूरों की प्रताड़ना, लांछना एवं अपमान के घूंट पीकर जी रहे जिंदगी को उजागर किया है । इनकी सबसे चर्चित उपन्यास 'लाल पसीना', 'गाँधीजी बोले थे', 'और नदी बहती रही' आदि है, जो कि गिरमिटिया जीवन की त्रासदी को व्यक्त करने वाला उपन्यास है । इसके अतिरिक्त इन्होंने 'हड़ताल कब होगी', 'आन्दोलन', 'शैफाली', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा',. 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग', 'हम प्रवासी' आदि उपन्यास है । जबकि 'अब कल आएगा यमराज', 'बवंडर बाहर भीतर', 'वह बीच का आदमी', 'इंसान और मशीन' आदि चर्चित कहानी संग्रह है, इसके अतिरिक्त 'नागफनी की उलझी सांसे', 'केक्टस के दांत' काव्य संग्रह है । इसके साथ ही साथ 'एक दृश्य', 'गूंगा इतिहास' आदि इनके नाटक है । अतः इन्होंने अबतक लगभग 75 से भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

अधिक पुस्तकों की रचना की हैं द्य हिन्दी के अलावा क्रियोली भाषा एवं फ्रांस भाषा में भी इनकी अनुदित रचनाएँ है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि प्रवासी हिन्दी साहित्य जगत में १९३७ में जन्में अभिमन्यु अनत ने 20वीं सदी से लेकर 21वीं सदी के इस लंबी अवधि में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाने वाले साहित्यकार रहे हैं । यहाँ तक कि 2009 में इनके चर्चित उपन्यास 'हम प्रवासी' काफी चर्चा में रही, वहीं दूसरी ओर अंतिम दिनों के उपन्यास 'क्यों न फिर से' आतीत से वर्तमान की ओर एवं नवीनता की ओर ईशारा करता है । एक ओर जहाँ समाज में शोषण अत्याचार किया जा रहा था, जिसका दंश न केवल स्त्रियों को सहना पड़ता बल्कि पुरुष वर्ग भी इसका शिकार होते, क्योंकि भारत से शर्तबंदी प्रथा के माध्यम से अपने वतन से दूर प्रलोभन दिखा कर जो ठेकेदार या बिचौलिए उन्हें ले जाते वे मुलतः भारतवंशी ही हुआ करते ।

'हम प्रवासी' उपन्यास में नायक अपनी छोटी सी उम्र में अपने आँखों के सामने अपने भाई की मृत्यु को देखता है और ऐसे में वह अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रण साधता है । बिना परिवार के अकेला रहना, अपनों से दूर जाने की पीड़ा, घुटन, संत्रास का रूप धारण करता है, क्योंकि बिना परिवार के जिन्दगी कैसे जिया जा सकता द्य परन्तु प्रकाश अपनी असीम यातनाओं के बावजूद भी आगे बढ़कर औरों की मदद करने को तत्पर रहता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य में बालक, बुजुर्ग, मजदूर. युवा, स्त्रियों आदि की समस्याओं पर बल दिया है, जबकि ये सभी कोई और नहीं बल्कि भारतीय गिरमिटिया मजदूर है जो कि प्रवास जा बसे हैं । प्रवासी स्त्री जीवन के संघर्ष को व्यक्त करते हुए अभिमन्यु अनत अपनी कहानी संग्रह 'एक थाल समंदर' में वे कहते हैं– "कारखानों में, खेतों में काम करने वाली स्त्रियों को अनेक बार शोषण का शिकार होना पड़ता है । इनकी 'ज्वार–भाटा' व 'भीतर आना मना है ।"[9] अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने मानवीय संबंधों को हर दृष्टिकोण के साथ उकेरा है।

'अपनी–अपनी सीमा' उपन्यास में उपन्यासकार ने आर्थिक अभाव के चलते स्त्री को काम करना पड़ता है और आर्थिक संसाधन की कमी के कारण पति–पत्नी का दाम्पत्य जीवन उलझन भरा होता है द्य वर्तमान समय में हर रिश्ता खोखला होता जा रहा है, प्रत्येक संबंध शर्त और स्वार्थ की जमीन पर टिका हुआ है । क्योंकि पत्नी का घर के बाहर जाकर काम करने की वजह से पति शंकालु प्रवृति का हो जाता है, जिससे थक–हार कर पत्नी कह उठती है– "जिस दिन मैं अपना सिर किसी दूसरे मर्द के कंधे पर रख दूंगी, उस दिन के बाद इस चार दिवार के भीतर कदम नहीं रखूंगी ।"[10]

दाम्पत्य जीवन में बिखराव आने का मुख्य कारण था– आर्थिक विपन्नता । अपने पति आलोक की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण घर की बहु सीमा काम करने के लिए निकल पड़ती है । परिणाम यह होता है कि पति आलोक को उसका बाहर जाकर काम करना नहीं भांता, यही कारण है कि वैवाहिक जीवन टूटने की कगार पे जा खड़ा होता है । एक ओर जहाँ 'आपनी–अपनी सीमा' उपन्यास में पति–पत्नी के रिश्ते में शक की प्रवृति के कारण दाम्पत्य जीवन, त्रासदी को व्यक्त करता है । वहीं दूसरी ओर 'गाँधीजी बोले थे' उपन्यास में सीमा और प्रकाश का अन्तस्थ प्रेम की परिकल्पना की गई है, जबकि शैफाली' उपन्यास में पारिवारिक जीवन में बिखराव, संत्रास, घुटन को व्यतीत किया गया है ।

वास्तविकता तो यह है कि पति–पत्नी के आपसी संबंध एवं समर्पण मनोभाव ही दाम्पत्य जीवन का आधार शिला है । गिरमिटिया प्रवासी महिलाओं की समस्याएँ उन्नत देशों की समस्याओं से भिन्न रही हैं । 1834ई. की ये गिरमिटिया मजदूरनी अपनी पूरी जिन्दगी मालिकों से अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करती रहती है । उन गिरमिटिया प्रवासी महिलाओं को यह भी भय सदैव लगा रहता कि कहीं गोरे मालिकों की कुदृष्टि उन पर न पड़ जाए । इतना ही नहीं कई बार इनके पतियों को बड़ी नौकरी देने का लालच देकर अपना गुलाम बना लेते । ताकि इन गोरे सरदार के एहसान तले दबकर अपनी मर्जी का कुछ भी न कर सकें । 'कुहासे का दायरा' उपन्यास में प्रेम में हताश नायिका के जीवन का वर्णन किया है, तो 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' में देह व्यापार की समस्या को उजागर किया गया है कि किस प्रकार गोरे मालिक अपनी बिस्तर गर्म करने के लिए गिरमिटिया स्त्रियों को जबरन घसीट कर ले जाते और उनका शारीरिक शोषण करते, अपना भोग की वस्तु मात्र बनाते ।

'अपनी–अपनी सीमा' उपन्यास में सीमा इन सभी परिस्थितियों से तंग आकर विद्रोह करने को सोचती है– "अब घोषणा कर दे कि अब यह नहीं चलेगा द्य अगर वह जुल्म था तो उसके विरुद्ध खड़ा होना चाहिए ।"[11]

सच्चाई तो यह है कि प्रवास में पहुँच कर प्रवासी प्रायः दो संस्कृतियों के मध्य पेंडुलम की तरह झूलता रहता है, जिसके चलते वह न इधर का रह पाता है न ही उधर का । एक संस्कृति उस देश की जहाँ से वह आया है, जहाँ उसका जन्मा एवं पला–बढ़ा हो द्य जबकि दूसरा वह जहाँ वह व्यक्ति अपने सुनहरे भविष्य की कामना कर अच्छी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

सुख–सुविधाएं जुटाने के लिए आया है। इन दोनों संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बैठना बहुत कठिन कार्य है । अर्थात् भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति में काफी अंतर है, इन दो विविध संस्कृति के साथ सामंजस्य बैठा पाना अति कठिन है । अनत जी का समस्त साहित्य पाश्चात्य परिवेश की परिसीमा पर केन्द्रित है । 'एक और उम्मीद', 'हड़ताल कब होगी', 'आन्दोलन' आदि उपन्यास राजनीति परिदृश्य को इंगित करता है । अपने कथा साहित्य के माध्यम से उपन्यासकार अभिमन्यु अनत ने गिरमिटिया मजदूरों के जीवन की त्रासदी को बड़े ही मार्मिक ढंग से बखान किया है । इनके उपन्यास साहित्य में गिरमिटिया जीवन की पीड़ा का चित्रण अनेक रूपों में किया गया है ।

'जम गया सूरज' उपन्यास में बताया गया है कि "कैसे भारतीयों को बहला–फुसला कर व अच्छे जीवन के ख्वाब दिखाकर मॉरिशस ले जाया गया था और वहाँ उनके साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था । न उन्हें भर पेट खाना मिलता, न पहनने को कपड़े, न रहने की छाया ।"[12] इनका समस्त उपन्यास साहित्य प्रवासी समाज में कुली मजदूरों की पीड़ा, उनकी दर्द भरी दास्ताँ एवं अभावग्रस्त जिन्दगी को दर्शाया गया है । साहित्यकार ने केवल प्रवासी मजदूरों की पीड़ा की बात नहीं कही है बल्कि इसके साथ साथ प्रवासिनी स्त्री के जीवन की विडम्बना तथा उनके जीवन की त्रासदी को नया आयाम देकर उभारने का प्रयास किया है ताकि पाठक आसानी से प्रवासी समाज की तमाम गतिविधियों से रु–ब–रु हो सकें ।

प्रवासी साहित्य के अंतर्गत लिखे गये अधिकतर उपन्यास सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं से जूझते हुए लेखनी के धरातल पर जा खड़ा होता है । प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की यह परम्परा दीर्घकालीन बनी रहे तथा यथावत जारी रहे । क्योंकि प्रवासी साहित्यकारों ने अपने जीवन की समस्याओं को अपनी लेखनी का माध्यम बनाया तथा कागज के पन्नों पर अंकित कर जीवन की विविध समस्याओं को वाणी दे डाला द्य इनके जितने भी पात्र है वे सभी परिवेश के अनुकूल उनके आस–पास के समाज से संबंध रखने वाले पात्र हैं । वह जिस परिवेश में अपनी जीविकापार्जन करता है उसे उस परिवेश से होकर गुजरना पड़ता है, जैसे इनके समस्त पात्र गिरमिट समाज से जुड़ा हुआ है, वे सभी गुलामी की जन्दगी जीकर गुजर–बसर कर रहे हैं । यह कारण है कि उनका परिवेश गुलामी की परिपाटी पे जाकर टिक जाता है, जिससे व्यक्ति कभी ऊभर नहीं पाता । कुलमिलाकर हम कह सकते हैं कि प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन में अभिमन्यु अनत का विशेष योगदान रहा । इन्होंने प्रवासी समाज की अवस्थाओं पर प्रकाश डालकर प्रवासियों की गाथा का बखान किया है । यही कारण है कि इनकी लेखनी पाठकों के साक्ष अपनी असीम पहचान बना ली है ।

प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, लगभग 1913 के आस–पास लिखा जाने लगा । शुरूआती दौर में लेखन प्रक्रिया में गिरावटें आई फिर सत्तर के दशक के आस–पास प्रवासी हिंदी साहित्य का प्रादुर्भाव काफी तीव्र गति पर रहा, किन्तु 90 के दशक के बाद फिर से प्रावासी हिंदी साहित्य लेखन में गिरावटें आनी शुरू हो गई । परिणामस्वरूप यह देखा गया कि विकासशील देशों ने 60 के दशक में ही लेखन कला में निरंतर आगे बढ़ने का परचम लहराया ।

प्रवास जाने के क्रम में शुरुआती दौर में, मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों की ओर अग्रसर हुआ, और लोगों को जोर जबरदस्ती गुलामी करवाने हेतु प्रवास में ले जाया गया । कुछ प्रवास स्वइच्छा के कारण हुए तो कुछ प्रवास मजबूरीवश । परन्तु इन दोनों प्रकार के प्रवास के कारणों में अंतर केवल इतना है कि यह प्रवास में व्यक्ति परिस्थितिवश प्रवास जाने को विवश था । प्रवासी हिंदी साहित्य की शुरुआत यहाँ के लोकगीतों व काव्य के रूप में हुई । चूँकि दिनभर गिरमिटिया कठिन परिश्रम किया करते और रात को बैठकर एक–दूसरे के दुःख–दर्द का बखान लोकगीत के माध्यम से गाकर सुनाते द्य इन प्रवासी देशों में गद्द साहित्य का विकास अस्सी के दशक में आरंभ होता है । जिसमें गिरमिटिया के अत्याचारों की बात कही गई । साथ–ही–साथ मजदूर जीवन–संघर्ष को, यातनाओं आदि को प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य में पिरोया है । साथ ही वहाँ की राजनीति, गिरमिटिया लोगों की दिनचर्या, उनके रीति–रिवाजों को भी उकेरा है । यही कारण है कि इनका साहित्य गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा के दर्दनाक इतिहास का दस्तावेज है । निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्यकार अभिमन्यु अनत ने अपने लेखन विषय का केंद्र प्रवासी जीवन, उनके द्वंद्व, उनकी जीवन शैली एवं उनके जीवन में आये दिन नित नये–नये परिवर्तन तथा प्रवासी जीवन की त्रसदी आदि परिवेशगत समस्याओं का वर्णन किया है । साथ ही दो विभिन्न संस्कृति के टकराहट से उत्पन्न मानसिक अंतर्द्वंद्व को भी उकेरा है, ताकि प्रवासी व्यक्ति के जीवन को तथा प्रवासी की स्थिति को प्रवासी व्यक्ति ही जान सकें। मनोवैज्ञानिक समस्याओं को भी अपने कथा–साहित्य का विषय बनाया । साथ ही मनोवैज्ञानिक समस्याएँ जैसे– अंतर्द्वंद्व, संत्रास, जीवन की त्रासदी, घुटन, अपराधबोध,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कुंठा, बाल–मनोदशा, स्त्री–जीवन की कुंठा, सांस्कृतिक टकराव, जीवन संघर्ष आदि जैसे अनेक पहलुओं को उजागर किया है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिंदी कोश, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी, 1988, छात्र संस्करण, पृष्ठ–674.
2. जे.पी.सिंह, समाजशास्त्रःअवधारणा एवं सिद्धांत, पृष्ठ–602, तृतीय संस्करण–2013 नयी दिल्ली।
3. सनाढ्य, तोताराम की कथा, गिरमिटिया के अनुभव, संपादक– ब्रज विलाश लाल, आशुतोष कुमार, योगेन्द्र यादे, राजकमल प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2012, पृष्ठ संख्या–9.
4. अभिमन्यु अनत, 'तीसरे किनारे पर' उपन्यास, पृष्ठ–10.
5. अभिमन्यु अनत, 'माथे का टीका' 'खामोशी की चीत्कार' कहानी संग्रह, राजकमल प्रकाशन, 1976, पृष्ठ–12.
6. अभिमन्यु अनत, 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा', उपन्यास पृष्ठ–120.
7. डॉ. मृदुला कीर्ति ।
8. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत एक बातचीत, पृष्ठ–32.
9. अभिमन्यु अनत, 'एक थाल समंदर' कहानी संग्रह, पृष्ठ–29.
10. अभिमन्यु अनत, 'अपनी–अपनी सीमा' उपन्यास, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1983, पृष्ठ–82.
11. वहीँ, पृष्ठ–90 .
12. अभिमन्यु अनत, 'जम गया सूरज' उपन्यास, पृष्ठ–26.

*****